

الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ﴿٤٩﴾ فِيهِنَّ خَيْرٌ حَسَانٌ ﴿٥٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में औरतें हैं आदत की नेक सूत की अच्छी तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكْذِبِينَ ﴿٤١﴾ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٤٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे हूरें हैं खैमों में पर्दा नशीन⁴⁷ तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكْذِبِينَ ﴿٤٣﴾ لَمْ يَطْمِئِنَّ أَنْسَ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٤٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे उन से पहले उन्हें हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكْذِبِينَ ﴿٤٥﴾ مُتَكِبِينَ عَلَى رَأْفِ خُضِرٍ وَعَبْقَرِيِّ حَسَانٍ ﴿٤٦﴾ فَبِأَيِّ

झुटलाओगे⁴⁸ तक्या लगाए हुए सब्ज बिछों और मुनक्कश खूब सूत चांदनियों पर तो अपने

الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ﴿٤٧﴾ تَبَرَّكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٤٨﴾

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अज़मत वाला बुजुर्गी वाला

﴿١﴾ ﴿٢﴾ ﴿٣﴾ ﴿٤﴾ ﴿٥﴾ ﴿٦﴾ ﴿٧﴾ ﴿٨﴾ ﴿٩﴾ ﴿١٠﴾ ﴿١١﴾ ﴿١٢﴾ ﴿١٣﴾ ﴿١٤﴾ ﴿١٥﴾ ﴿١٦﴾ ﴿١٧﴾ ﴿١٨﴾ ﴿١٩﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿٢١﴾ ﴿٢٢﴾ ﴿٢٣﴾ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٥﴾ ﴿٢٦﴾ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٨﴾ ﴿٢٩﴾ ﴿٣०﴾ ﴿٣१﴾ ﴿३२﴾ ﴿३३﴾ ﴿३४﴾ ﴿३५﴾ ﴿३६﴾ ﴿३७﴾ ﴿३८﴾ ﴿३९﴾ ﴿४०﴾ ﴿४१﴾ ﴿४२﴾ ﴿४३﴾ ﴿४४﴾ ﴿४५﴾ ﴿४६﴾ ﴿४७﴾ ﴿४८﴾ ﴿४९﴾ ﴿५०﴾ ﴿५१﴾ ﴿५२﴾ ﴿५३﴾ ﴿५४﴾ ﴿५५﴾ ﴿५६﴾ ﴿५७﴾ ﴿५८﴾ ﴿५९﴾ ﴿६०﴾ ﴿६१﴾ ﴿६२﴾ ﴿६३﴾ ﴿६४﴾ ﴿६५﴾ ﴿६६﴾ ﴿६७﴾ ﴿६८﴾ ﴿६९﴾ ﴿७०﴾ ﴿७१﴾ ﴿७२﴾ ﴿७३﴾ ﴿७४﴾ ﴿७५﴾ ﴿७६﴾ ﴿७७﴾ ﴿७८﴾ ﴿७९﴾ ﴿८०﴾ ﴿८१﴾ ﴿८२﴾ ﴿८३﴾ ﴿८४﴾ ﴿८५﴾ ﴿८६﴾ ﴿८७﴾ ﴿८८﴾ ﴿८९﴾ ﴿९०﴾ ﴿९१﴾ ﴿९२﴾ ﴿९३﴾ ﴿९४﴾ ﴿९५﴾ ﴿९६﴾ ﴿९७﴾ ﴿९८﴾ ﴿९९﴾ ﴿१००﴾

सूरए वाकिअह मक्किया है, इस में छियानवे आयतें और तीन रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला!

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۱ لَيْسَ لَوْقَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۲ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۳

जब हो लेगी वोह होने वाली² उस वक्त उस के होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी किसी को पस्त करने वाली³ किसी को बुलन्दी देने वाली⁴

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ۴ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۵ فَكَانَتْ هَبَاءً

जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर⁵ और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा हो कर तो हो जाएंगे जैसे रोज़न (सूराख) की धूप में गुबार के

47 : कि उन खैमों से बाहर नहीं निकलतीं, येह उन की शराफ़त व करामत है। हदीस शरीफ़ में है अगर जन्ती औरतों में से ज़मीन की तरफ़ किसी की एक झलक पड़ जाए तो आस्मान व ज़मीन के दरमियान की तमाम फ़ज़ा रोशन हो जाए और खुशबू से भर जाए और उन के खैमे मोती और ज़बर ज़द के होंगे। 48 : और उन के शोहर जन्त में ऐश करेगे 1 : सूरए वाकिअह मक्किया है सिवाए आयत "أَفْهَذَا الْحَدِيثُ" और आयत "ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ" के, इस सूत में तीन 3 रकूअ और छियानवे या सत्तानवे या निनानवे आयतें और तीन सो अठत्तर 378 कलिमे और एक हज़ार सात सो तीन 1703 हर्फ़ हैं। इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की है कि सथियदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि जो शख्स सूरए वाकिअह को हर शब पढ़े वोह फ़ाके से हमेशा महफूज़ रहेगा। (غَارُونَ) 2 : या'नी जब क्रियामत काइम हो जो जरूर होने वाली है। 3 : जहन्म में गिरा कर 4 : दुखूले जन्त के साथ। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जो लोग दुन्या में ऊंचे थे क्रियामत उन्हें पस्त करेगी और जो दुन्या में पस्ती में थे उन के मर्तबे बुलन्द करेगी और येह भी कहा गया है कि अहले मा'सियत को पस्त करेगी और अहले ताअत को बुलन्द। 5 : हत्ता कि इस की तमाम इमारतें गिर जाएंगी।

مُتَبَيِّنًا ٦ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ٧ فَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ٨ مَا أَصْحَابُ

बारीक ज़र्रे फैले हुए और तुम तीन किस्म के हो जाओगे तो दहनी तरफ वाले⁶ कैसे दहनी

الْيَمِينِ ٨ وَأَصْحَابُ الشُّعْبَةِ ٩ مَا أَصْحَابُ الشُّعْبَةِ ٩ وَالسَّبْقُونَ

तरफ वाले⁷ और बाई तरफ वाले⁸ कैसे बाई तरफ वाले⁹ और जो सबकत ले गए¹⁰

السَّبْقُونَ ١٠ أُولَئِكَ الْقَرَّبُونَ ١١ فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ١٢ ثَلَاثَةٌ مِّنَ

वोह तो सबकत ही ले गए¹¹ वोही मुक़र्रबे बारगाह हैं चैन के बागों में अगलों में से

الْأُولَئِينَ ١٣ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ١٤ عَلَى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ١٥

एक गुरौह और पिछलों में से थोड़े¹² जड़ाउ तख्तों पर होंगे¹³

مُعْكَبِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ١٦ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَدَّدُونَ ١٧

उन पर तक्या लगाए हुए आमने सामने¹⁴ उन के गिर्द लिये फिरेंगे¹⁵ हमेशा रहने वाले लड़के¹⁶

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ ١٨ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ١٩ لَا يَصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا

कूजे और आपताबे और जाम आंखों के सामने बहती शराब के उस से न उन्हें दर्दे सर हो

يُنزِفُونَ ٢٠ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ٢١ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا

न होश में फर्क आए¹⁷ और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोशत

6 : या'नी जिन के नामए आ'माल उन के दहने हाथों में दिये जाएंगे । 7 : येह उन की ता'जीमे शान के लिये फ़रमाया, वोह बड़ी शान रखते हैं, सईद हैं, जन्नत में दाखिल होंगे । 8 : जिन के नामहाए आ'माल बाएं हाथों में दिये जाएंगे । 9 : येह उन की तहकीरे शान के लिये फ़रमाया कि वोह शकी हैं जहन्नम में दाखिल होंगे । 10 : नेकियों में 11 : दुखूले जन्नत में । हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم ने फ़रमाया कि वोह हिजरत में सबकत करने वाले हैं कि आखिरत में जन्नत की तरफ़ सबकत करेंगे । एक कौल येह है कि वोह इस्लाम की तरफ़ सबकत करने वाले हैं और एक कौल येह है कि वोह मुहाजिरीन व अन्सार हैं जिन्हों ने दोनों क़िस्लों की तरफ़ नमाजें पढ़ीं 12 : या'नी साबिकीन अगलों में से बहुत हैं और पिछलों में से थोड़े और अगलों में से मुराद या तो पहली उम्मत हैं ज़मानए हज़रते आदम से हमारे सरकार सय्यिदे आलम صلى الله تعالى عليه وسلم के अहदे मुबारक तक की, जैसा कि अक्सर मुफ़स्सरीन का कौल है, लेकिन येह कौल निहायत जईफ़ है अगर्चे मुफ़स्सरीन ने इस के वजूहे जो'फ़ के जवाब में बहुत सी तौजीहात भी की हैं, कौले सहीह तफ़सीर में येह है कि अगलों से उम्मेते मुहम्मदिय्यह ही के पहले लोग मुहाजिरीन व अन्सार में से जो साबिकीने अब्वलीन हैं वोह मुराद हैं और पिछलों से उन के बा'द वाले, अहादीस से भी इस की ताईद होती है । हदीसे मरफूअ में है कि अब्वलीनो आखिरीन यहां इसी उम्मत के पहले और पिछले हैं और येह भी मरवी है कि हज़ूर صلى الله تعالى عليه وسلم ने फ़रमाया कि दोनों गुरौह मेरी ही उम्मत के हैं । 13 : जिन में ला'ल, याकूत, मोती वगैरा जवाहिरात जड़े होंगे 14 : हुस्ने इशरत के साथ बा शानो शकोह एक दूसरे को देख कर मसरूर दिलशाद होंगे 15 : आदाबे ख़िदमत के साथ 16 : जो न मरें न बूढ़े हों न उन में तग़य्युर आए, येह अब्बास तआला ने अहले जन्नत की ख़िदमत के लिये जन्नत में पैदा फ़रमाए । 17 : ब ख़िलाफ़ शराबे दुन्या के कि इस के पीने से हवास मुख़ल हो जाते हैं (बिगड़ जाते हैं) ।

يَسْتَهْوُونَ ٢١ وَحُورًا عِينًا ٢٢ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ٢٣ جَزَاءً

जो चाहें¹⁸ और बड़ी आंख वालीयां हूँ¹⁹ जैसे छुपे रखे हुए मोती²⁰ सिला

بِأَسَاءٍ كَانُوا يَعْمَلُونَ ٢٤ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْتِيهَا إِلَّا

उन के आ'माल का²¹ उस में न सुनेगे कोई बेकार बात न गुनहगारी²² हां

قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ٢٥ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ٢٦ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ٢٧ فِي

येह कहना होगा सलाम सलाम²³ और दहनी तरफ वाले कैसे दहनी तरफ वाले²⁴ बे कांटे

سِدْرًا مَّخْضُودٍ ٢٨ وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ٢٩ وَظِلِّ مَّدُودٍ ٣٠ وَمَاءٍ

की बेरियों में और केले के गुच्छों में²⁵ और हमेशा के साए में और हमेशा

مَسْكُوبٍ ٣١ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ٣٢ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ٣٣ وَ

जारी पानी में और बहुत से मेवों में जो न खत्म हों²⁶ और न रोके जाएं²⁷ और

فُرْشٍ مَّرْفُوعَةٍ ٣٤ إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنشَاءً ٣٥ فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ٣٦

बुलन्द बिछोनों में²⁸ बेशक हम ने उन औरतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कुंवारियां अपने शोहर पर प्यारियां

عُرُبًا أَتْرَابًا ٣٧ لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ٣٨ ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأُولَىٰ ٣٩ وَثَلَاثَةٌ

उन्हें प्यार दिलातियां एक इम्र वालियां²⁹ दहनी तरफ वालों के लिये अगलों में से एक गुरौह और पिछलों

مِّنَ الْآخِرِينَ ٤٠ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ٤١ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ٤٢ فِي

में से एक गुरौह³⁰ और बाई तरफ वाले³¹ कैसे बाई तरफ वाले³² जलती

18 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما ने फ़रमाया कि अगर जन्नती को परिन्दों के गोशत की ख़्वाहिश होगी तो उस के हस्बे मरजी परिन्द उड़ता हुवा सामने आएगा और रिकाबी में आ कर सामने पेश होगा उस में से जितना चाहेगा जन्नती खाएगा फिर वोह उड़ जाएगा। (٥٧٦)

19 : उन के लिये होंगी 20 : या'नी जैसा मोती सदफ़ में छुपा होता है कि न तो उसे किसी के हाथ ने छुवा न धूप और हवा लगी उस की सफ़ाई अपनी निहायत पर है, इसी तरह वोह हूँ अछूती होंगी, येह भी मरवी है कि हूरों के तबस्सुम से जन्नत में नूर चमकेगा और जब वोह चलेंगी तो उन के हाथों और पाउं के ज़ेवरों से तक्दीस व तम्जीद की आवाज़ें आएंगी और याकूती हार उन की गरदनो के हुस्नो खूबी से हंसेंगे। 21 : कि दुन्या में उन्हों ने फ़रमां बरदारी की। 22 : या'नी जन्नत में कोई ना गवार और बातिल बात सुनने में न आएगी। 23 : जन्नती आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे, मलाएका अहले जन्नत को सलाम करेंगे **اَللّٰهُ** रब्बुल इज़ज़त की तरफ़ से उन की तरफ़ सलाम आएगा, येह हाल तो साबिक़ीने मुकर्रबिन का था, इस के बा'द जन्नतियों के दूसरे गुरौह अस्हाबे यमीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है : 24 : उन की अजीब शान है कि **اَللّٰهُ** के हुज़ूर में मुअज़्जुजो मुकर्रम हैं। 25 : जिन के दरख्त जड़ से चोटी तक फलों से भरे होंगे। 26 : जब कोई फल तोड़ा जाए फ़ौरन उस की जगह वैसे ही दो मौजूद। 27 : अहले जन्नत फलों के लेने से। 28 : जो मुरस्सअ ऊंचे ऊंचे तख़्तों पर होंगे और येह भी कहा गया है कि बिछोनों से मुयाद औरतें हैं इस तक्दीर पर मा'ना येह होंगे कि औरतें फ़ज़लो जमाल में बुलन्द दरजा रखती होंगी। 29 : जवान और उन के शोहर भी जवान और येह जवानी हमेशा काइम रहने वाली। 30 : येह अस्हाबे यमीन के दो गुरौहों का बयान है कि वोह इस उम्मत

سَوْمٍ وَحَيِّمٍ ٣٢ وَظِلٍّ مِّنْ يَّحْصُومٍ ٣٣ لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ٣٤

हवा और खौलते पानी में और जलते धूप की छाउं में³³ जो न ठन्डी न इज्जत की

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ٣٥ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ

बेशक वोह इस से पहले³⁴ ने'मतों में थे और उस बड़े गुनाह की³⁵ हट (ज़िद)

الْعَظِيمِ ٣٦ وَكَانُوا يَقُولُونَ ٣٧ أَيْدَامِنَّا وَكُنَّا رَبَّآ وَعِظَاءً إِنَّا

रखते थे और कहते थे क्या जब हम मर जाएं और हड्डियां और मिट्टी हो जाएं तो क्या ज़रूर हम

لَتَبْعُوهُنَّ ٣٨ أَوْ آبَاءُ وُنَا الْأَوْلَادِ ٣٩ قُلْ إِنْ الْأَوْلِيَاءُ وَ

उठाए जाएंगे और क्या हमारे अगले बाप दादा भी तुम फ़रमाओ कि बेशक सब अगले और

الْآخِرِينَ ٣٩ لَتَجُوعُونَ ٤٠ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ٤١ ثُمَّ إِنَّكُمْ

पिछले ज़रूर इकट्ठे किये जाएंगे एक जाने हुए दिन की मीआद पर³⁶ फिर बेशक तुम

أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمَكْذِبُونَ ٤٢ لَا يَكُونُ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زُقُومٍ ٤٣

ऐ गुमराहो³⁷ झुटलाने वालो ज़रूर थूहड़ के पेड़ में से खाओगे

فَمَا تَأْكُلُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ٤٤ فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَيِّمِ ٤٥ فَشَرِبُونَ

फिर उस से पेट भरोगे फिर उस पर खौलता पानी पियोगे फिर ऐसा पियोगे

شَرِبَ الْهَيْمِ ٤٥ هَذَا نُزِّلَهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ٤٦ نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْ

जैसे सख़्त प्यासे ऊंट पियें³⁸ येह उन की मेहमानी है इन्साफ़ के दिन हम ने तुम्हें पैदा किया³⁹ तो तुम क्यूं

لَا تُصَدِّقُونَ ٤٧ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَشْكُرُونَ ٤٨ ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ

नहीं सच मानते⁴⁰ तो भला देखो तो वोह मनी जो गिराते हो⁴¹ क्या तुम उस का आदमी बनाते हो या हम

के पहलों पिछलों दोनों गुरौहों में से होंगे, पहले गुरौह तो अस्हाबे रसूलुल्लाह हैं (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) और पिछले उन के बा'द वाले, इस से पहले रकूअ में साबिकीने मुक़रबीन की दो जमाअतों का ज़िक्र था और इस आयत में अस्हाबे यमीन के दो गुरौहों का बयान है। 31 : जिन के नामए आ'माल बाएं हाथों में दिये जाएंगे। 32 : उन का हाल शकावत में अजीब है, उन के अज़ाब का बयान फ़रमाया जाता है कि वोह इस हाल में होंगे : 33 : जो निहायत तारीक व सियाह होगा 34 : दुन्या के अन्दर 35 : या'नी शिर्क की 36 : वोह रोने क्रियामत है। 37 : राहे हक़ से बहक्ने वालो और हक़ को 38 : उन पर ऐसी भूक़ मुसल्लत की जाएगी कि वोह मुज्तर हो कर जहन्म का जलता थूहड़ खाएंगे, फिर जब उस से पेट भर लेंगे तो उन पर प्यास मुसल्लत की जाएगी जिस से मुज्तर हो कर ऐसा खौलता पानी पियेंगे जो आंतें काट डालेगा।

39 : नेस्त से हस्त किया 40 : मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को। 41 : औरतों के रेहम में।

الْخَلْقُونَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾

बनाने वाले हैं⁴² हम ने तुम में मरना ठहराया⁴³ और हम इस से हारे नहीं

عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئْكُمْ فِي مَالٍ تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस की तुम्हें खबर नहीं⁴⁴ और बेशक तुम जान चुके हो

النِّشَاءَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾

पहली उठान⁴⁵ फिर क्यों नहीं सोचते⁴⁶ तो भला बताओ तो जो बोते हो

ءَأَنْتُمْ تَرْاعُونَ أَمْرَ نَحْنُ الزُّرْعُونَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا

क्या तुम उस की खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं⁴⁷ हम चाहें तो⁴⁸ उसे रौंदन (पामाल) कर दें⁴⁹

فَطَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمُعْرِمُونَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

फिर तुम बातें बनाते रह जाओ⁵⁰ कि हम पर चट्टी (तावान) पड़ी⁵¹ बल्कि हम बे नसीब रहे

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾ ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ

तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या

نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

हम हैं उतारने वाले⁵² हम चाहें तो उसे खारी कर दें⁵³ फिर क्यों नहीं शुक करते⁵⁴

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾ ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ

तो भला बताओ तो वोह आग जो तुम रोशन करते हो⁵⁵ क्या तुम ने उस का पेड़ पैदा किया⁵⁶ या हम हैं

الْمُنشِئُونَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَمَتَاعًا لِلْمُقِيمِينَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ

पैदा करने वाले हम ने उसे⁵⁷ जहन्नम की यादगार बनाया⁵⁸ और जंगल में मुसाफ़ि़रों का फ़ाएदा⁵⁹ तो ऐ महबूब तुम पाकी बोलो

42 : कि नुत्फे को सूरते इन्सानी देते हैं, जिन्दगी अता फरमाते हैं, तो मुर्दों को जिन्दा करना हमारी कुदरत से क्या बर्दद । 43 : हुस्वे इक्तिजाए हिक्मत व मशियत और उर्ज़े मुख्तलिफ रखीं, कोई बचपन ही में मर जाता है कोई जवान हो कर, कोई अधेड़ उर्ज़ में, कोई बुढ़ापे तक पहुंचता है, जो हम मुक्दर करते हैं वोही होता है । 44 : या'नी मस्बू कर के बन्दर सुअर वगैरा की सूरत बना दें, येह सब हमारी कुदरत में है । 45 : कि हम ने तुम्हें नेस्त से हस्त किया । 46 : कि जो नेस्त को हस्त कर सकता है वोह बिल यक्वीन मुर्दों को जिन्दा करने पर कादिर है । 47 : इस में शक नहीं कि बालें बनाना और उस में दाने पैदा करना **اَللّٰهُ** तआला ही का काम है और किसी का नहीं । 48 : जो तुम बोते हो 49 : खुश्क घास चूरा चूरा जो किसी काम की न रहे 50 : मुतहय्यिर और नादिव व ग़मगीन 51 : हमारा माल बेकार जाएअ हो गया 52 : अपनी कुदरते कामिला से 53 : कि कोई पी न सके । 54 : **اَللّٰهُ** तआला की ने'मत और उस के पइसान व करम का । 55 : दो तर लकडियों से जिन को जन्द व जन्दा कहते हैं उन के रगड़ने से आग निकलती है । 56 : मर्ख व अफ़ार (दो दरख़ा) जिन से जन्द व जन्दा (तर लकडियां) ली जाती है । 57 : या'नी आग को 58 : कि देखने वाला उस को देख कर जहन्नम की बड़ी आग को याद करे और **اَللّٰهُ** तआला से और उस

بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ٤٧ فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْجِعِ النُّجُومِ ٤٥ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ

अपने अज़मत वाले रब के नाम की तो मुझे कसम है उन जगहों की जहां तारे डूबते हैं⁶⁰ और तुम समझो

لَوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ٤٦ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ٤٤ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ٤٨ لَا

तो यह बड़ी कसम है बेशक यह इज़त वाला कुरआन है⁶¹ महफूज़ नविशते में⁶² इसे न

يَسَّءَ إِلَّا الْمَطَهَّرُونَ ٤٩ تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ٨٠ أَفِيهَذَا

छूएं मगर बा वुजू⁶³ उतारा हुवा है सारे जहान के रब का तो क्या

الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ٨١ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ٨٢

इस बात में तुम सुस्ती करते हो⁶⁴ और अपना हिस्सा यह रखते हो कि झुटलाते हो⁶⁵

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ٨٣ وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ٨٣ وَنَحْنُ

फिर क्यूं न हो कि जब जान गले तक पहुंचे और तुम⁶⁶ उस वक़्त देख रहे हो और हम⁶⁷

أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ٨٥ فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ

उस के ज़ियादा पास हैं तुम से मगर तुम्हें निगाह नहीं⁶⁸ तो क्यूं न हुवा अगर तुम्हें

مَدِينِينَ ٨٦ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٨٧ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ

बदला मिलना नहीं⁶⁹ कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो⁷⁰ फिर वोह मरने वाला अगर

الْمُقَرَّبِينَ ٨٨ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ ٩٠ وَجَّتْ نَعِيمٌ ٨٩ وَأَمَّا إِنْ كَانَ

मुक़रबों से है⁷¹ तो राहत है और फूल⁷² और चैन के बाग़⁷³ और अगर⁷⁴

के अज़ाब से डरे । 59 : कि अपने सफ़रों में उस से नफ़अ उठाते हैं । 60 : कि वोह मक़ाम हैं जुहुरे कुदरत व जलाले इलाही के । 61 : जो सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर नाज़िल फ़रमाया गया, क्यूं कि येह कलामे इलाही और वहुये रब्बानी है । 62 : जिस में तब्दील व तहरीफ़ मुम्किन नहीं । 63 मसाइल : जिस को गुस्ल की हाज़त हो या जिस का वुजू न हो या हाइज़ा औरत या निफ़ास वाली इन में से किसी को कुरआने मजीद का बिगैर गिलाफ़ वगैरा किसी कपडे के छूना जाइज़ नहीं, बे वुजू को याद पर (जबानी) कुरआन शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है लेकिन बे गुस्ल और हैज़ वाली को येह भी जाइज़ नहीं । 64 : और नहीं मानते 65 : हज़रते हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया वोह बन्दा बड़े टोटे (ख़सारे) में है जिस का हिस्सा किताबुल्लाह की तकज़ीब हो । 66 : ऐ अहले मथ्यित ! 67 : अपने इल्मो कुदरत के साथ 68 : तुम बसीरत नहीं रखते तुम नहीं जानते । 69 : मरने के बा'द उठ कर 70 : कुफ़र से फ़रमाया गया कि अगर ब ख़याल तुम्हारे मरने के बा'द उठना और आ'माल का हिस्सा किया जाना और जज़ा देने वाला मा'बूद येह कुछ भी न हो तो फिर क्या सबब है कि जब तुम्हारे प्यारों की रूह हल्क में पहुंचती है तो तुम उसे लौटा क्यूं नहीं लाते और जब येह तुम्हारे इख़्तियार में नहीं तो समझो कि काम अब्बाह तआला के इख़्तियार में है उस पर ईमान लाओ, इस के बा'द मख़्लूक के तबक़ात के अहवाल वक़ते मौत और उन के दरजात का बयान फ़रमाया । 71 : साबिकीन में से जिन का ज़िक्र ऊपर हो चुका तो उस के लिये 72 : अबुल आलिया ने कहा कि मुक़रबीन से जो कोई दुनिया से मुफ़रक़त करता है उस के पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है, उस की खुशबू लेता है तब रूह क़ब्ज़ होती है । 73 : आख़िरत में 74 : मरने वाला ।

مِنْ أَصْحَابِ الْيَبِينِ ۹۰ فَسَلَّمَ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَبِينِ ۹۱ وَأَمَّا إِنْ

दहनी तरफ़ वालों से हो तो ऐ महबूब तुम पर सलाम है दहनी तरफ़ वालों से⁷⁵ और अगर⁷⁶

كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ۹۲ فَذُرُّهُ مِنْ حَيْمٍ ۹۳ وَتَصْلِيَةٌ

झुटलाने वालों गुमराहों में से हो⁷⁷ तो उस की मेहमानी खौलता पानी और भड़कती आग

جَحِيمٍ ۹۳ إِنَّ هَذَا هُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۹۴ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۹۵

में धंसाना⁷⁸ यह बेशक आ'ला दरजे की यकीनी बात है तो ऐ महबूब तुम अपने अज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो⁷⁹

﴿اياتها ۲۹﴾ ﴿سورة الحديد مكية ۹۳﴾ ﴿ركوعاتها ۴﴾

सूरए हदीद मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۱ لَهُ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है² और वोही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है उसी के लिये है

مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۲ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

आस्मानों और ज़मीन की सल्लतनत जिलाता है³ और मारता⁴ और वोह सब कुछ

قَدِيرٌ ۳ هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۴ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

कर सकता है वोही अक्वल⁵ वोही आखिर⁶ वोही ज़ाहिर⁷ वोही बातिन⁸ और वोही सब कुछ

75 : मा'ना येह हैं कि ऐ सख्यिदे अम्बिया صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! आप उन का सलाम क़बूल फ़रमाएं और उन के लिये ग़मगीन न हों, वोह

अल्लाह तआला के अज़ाब से सलामत व महफूज़ रहेंगे और आप उन को उसी हाल में देखेंगे जो आप को पसन्द हो । 76 : मरने वाला

77 : या'नी अस्हाबे शिमाल में से 78 : जहन्नम की और मरने वालों के अहवाल और जो मज़ामीन इस सूत में बयान किये गए 79

हदीस : जब येह आयत नाज़िल हुई : "فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ" तो सख्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया इस को अपने रुकूअ में

दाखिल करो और जब "سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى" नाज़िल हुई तो फ़रमाया इसे अपने सज्दों में दाखिल करो । (ابوداؤد) **मसअला** : इस आयत से

साबित हुवा कि रुकूअ व सुजूद की तस्बीहात कुरआने करीम से माखूज़ हैं । 1 : सूरए हदीद मक्किय्या है या मदनिय्या, इस में चार 4 रुकूअ, उन्तीस

29 आयतें, पांच सो चवालीस 544 कलिमे, दो हज़ार चार सो छिहत्तर 2476 हर्फ़ हैं । 2 : जानदार हो या बेजान । 3 : मख्लूक को पैदा कर

के या येह मा'ना हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है 4 : या'नी मौत देता है ज़िन्दों को 5 : क़दीम, हर शै से क़बल, अक्वले वे इब्तिदा कि वोह था और

कुछ न था । 6 : हर शै के हलाक व फ़ना होने के बा'द रहने वाला, सब फ़ना हो जाएंगे और वोह हमेशा रहेगा उस के लिये इन्तिहा नहीं । 7 :

दलाइल व बराहीन से या येह मा'ना कि ग़ालिब हर शै पर । 8 : ह्वास उस के इदराक से अज़िज़ या येह मा'ना कि हर शै का जानने वाला ।